International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 8.141
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.12 No.3 January – February 2025

'रेहन पर रग्घू' उपन्यास में वृद्ध विमर्श

प्रो. डॉ. संगीता विष्णु भोसले

वसुंधरा कला महाविद्यालय, जुळे सोलापुर, सोलापुर (महाराष्ट्र)

***Corresponding Author* - प्रो. डॉ. संगीता विष्णु भोसले**

DOI - 10.5281/zenodo.22079411

शोध-सार:

काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' समकालीन भारतीय समाज में घटित सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक परिवर्तनों का बहुआयामी आख्यान है। उपन्यास का केंद्रीय पात्र रघुनाथ एक ऐसे वृद्ध व्यक्ति के रूप में सामने आता है, जिसकी व्यक्तिगत त्रासदी के भीतर भूमंडलीकरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद, परिवार-विघटन, पीढ़ी-अंतराल, जातीय रूढ़ियों और बदलते ग्राम्य जीवन की अनेक परतें दिखाई देती हैं। उपन्यास की कथा गाँव, शहर और अमेरिका तक फैली हुई है और इस व्यापक भूगोल के साथ रघुनाथ के जीवन में भावनात्मक दूरी भी बढ़ती जाती है। राजकमल प्रकाशन के अनुसार उपन्यास भूमंडलीकरण के कारण संवेदना, संबंध और सामूहिकता के विघटन का गहन अंकन करता है तथा समकालीन मनुष्य के अकेलेपन को गाँव-शहर-अमेरिका के विस्तृत भूगोल में प्रस्तुत करता है।

रघुनाथ की वृद्धावस्था केवल उम्र बढ़ने की जैविक प्रक्रिया नहीं है; यह उनके सामाजिक और पारिवारिक अस्तित्व के क्रमिक क्षरण की प्रक्रिया भी है। संतान के भविष्य के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाला पिता अंततः अपनी ही संतान के जीवन में हाशिये पर चला जाता है। संजय का विदेश जाना, धनंजय की आर्थिक अपेक्षाएँ, सरला के अंतर्जातीय विवाह को लेकर रघुनाथ का दृष्टिकोण तथा गाँव में जमीन और सामाजिक प्रतिष्ठा को लेकर संघर्ष—ये सभी प्रसंग वृद्ध व्यक्ति की मानसिक स्थिति को प्रभावित करते हैं। इस प्रकार 'रेहन पर रग्घू' में वृद्धावस्था को पारिवारिक उपेक्षा, भावनात्मक अकेलेपन, आर्थिक असुरक्षा, सामाजिक अपमान, स्मृति, अस्मिता और पीढ़ीगत संघर्ष के व्यापक संदर्भ में देखा जा सकता है।

बीज शब्द: रेहन पर रग्घू, काशीनाथ सिंह, वृद्धावस्था, रघुनाथ, पारिवारिक विघटन, अकेलापन, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, पीढ़ी-अंतराल, अस्मिता।

प्रस्तावना:

समकालीन हिंदी उपन्यास ने भारतीय समाज में हो रहे तीव्र परिवर्तनों को व्यापक रूप में अभिव्यक्त किया है। विशेषतः उदारीकरण, भूमंडलीकरण, बाजारवाद, नगरीकरण और उपभोक्तावाद के बाद पारिवारिक संबंधों तथा सामाजिक मूल्यों में महत्वपूर्ण परिवर्तन दिखाई देते हैं। संयुक्त परिवार की जगह एकल परिवारों का विस्तार, रोजगार के लिए शहरों और विदेशों की ओर पलायन, आर्थिक सफलता की बढ़ती

आकांक्षा तथा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की प्रधानता ने पारंपरिक पारिवारिक संरचना को प्रभावित किया है। इन परिवर्तनों का प्रभाव सबसे अधिक उन लोगों पर पड़ता है जिनका जीवन पारंपरिक पारिवारिक व्यवस्था और सामुदायिक संबंधों पर आधारित रहा है। वृद्ध व्यक्ति इस परिवर्तन का सबसे संवेदनशील अनुभव करता है। उसके लिए परिवार केवल निवास की व्यवस्था नहीं, बल्कि उसकी पहचान, सुरक्षा, स्मृति और भावनात्मक संसार का आधार होता है।

काशीनाथ सिंह का उपन्यास 'रेहन पर रग्घू' इसी बदलते सामाजिक परिदृश्य का महत्त्वपूर्ण दस्तावेज है। उपन्यास में रघुनाथ एक सेवानिवृत्त शिक्षक हैं, जिन्होंने अपना जीवन परिवार और संतान के भविष्य को सँवारने में लगा दिया। लेकिन जीवन के उत्तरार्ध में वे जिस परिस्थिति में पहुँचते हैं, वह आधुनिक भारतीय परिवार की गहरी विडंबना को सामने लाती है। उपन्यास के बारे में राजकमल प्रकाशन का परिचय भी इसे भूमंडलीकरण के परिणामस्वरूप संवेदना, संबंध और सामूहिकता के विघटन का आख्यान मानता है। इस दृष्टि से 'रेहन पर रग्घू' में वृद्धावस्था का अध्ययन केवल वृद्ध व्यक्ति की व्यक्तिगत पीड़ा का अध्ययन नहीं है। यह उस सामाजिक व्यवस्था का अध्ययन है जिसमें वृद्ध व्यक्ति धीरे-धीरे अपनी पारिवारिक, सामाजिक और सांस्कृतिक उपयोगिता खोता हुआ दिखाई देता है।

शोध की समस्या:

प्रस्तुत अध्ययन की मूल समस्या यह है कि 'रेहन पर रग्घू' में रघुनाथ की वृद्धावस्था किन सामाजिक, पारिवारिक, आर्थिक और मनोवैज्ञानिक परिस्थितियों से निर्मित होती है और लेखक इसके माध्यम से समकालीन समाज के किन अंतर्विरोधों को उद्घाटित करते हैं? यहाँ वृद्धावस्था को केवल आयु-विशेष न मानकर एक व्यापक सामाजिक अनुभव के रूप में देखा गया है।

शोध के उद्देश्य:

इस शोध के प्रमुख उद्देश्य हैं—

1. 'रेहन पर रग्घू' में रघुनाथ के वृद्ध जीवन का विश्लेषण करना।
2. वृद्धावस्था और पारिवारिक विघटन के संबंध को स्पष्ट करना।
3. भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभाव को रघुनाथ के जीवन के संदर्भ में समझना।
4. वृद्धावस्था में उत्पन्न अकेलेपन और मानसिक पीड़ा का अध्ययन करना।
5. पीढ़ी-अंतराल और बदलते पारिवारिक मूल्यों को रेखांकित करना।
6. रघुनाथ के माध्यम से वृद्ध व्यक्ति के अस्मिता-संकट को समझना।
7. गाँव और जमीन के साथ वृद्ध व्यक्ति के भावनात्मक संबंध का विश्लेषण करना।

शोध-पद्धति:

प्रस्तुत अध्ययन में मुख्यतः समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक और पाठ-विश्लेषणात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है। 'रेहन पर रग्घू' को प्राथमिक स्रोत मानते हुए रघुनाथ के चरित्र, उनके पारिवारिक संबंधों, सामाजिक परिवेश, मानसिक अवस्थाओं तथा जीवन-मूल्यों का विश्लेषण किया गया है।

उपन्यास पर उपलब्ध आलोचनात्मक सामग्री का भी सहारा लिया गया है। उपन्यास को भूमंडलीकरण और बाजारवाद के प्रभावों से जोड़ते हुए रघुनाथ की संतानों की बढ़ती आर्थिक आकांक्षाओं और घटती संवेदनशीलता को रेखांकित करता है।

'रेहन पर रग्घू': कथा-संदर्भ:

'रेहन पर रग्घू' काशीनाथ सिंह का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन से हुआ और 2008 का प्रथम संस्करण पुस्तक-स्रोतों में दर्ज है। उपन्यास का केंद्र रघुनाथ हैं। वे शिक्षक हैं और परिवार के प्रति समर्पित व्यक्ति हैं। उनके परिवार में पत्नी शीला, पुत्र संजय, पुत्र धनंजय और पुत्री सरला हैं। रघुनाथ की जीवन-दृष्टि पारंपरिक पारिवारिक मूल्यों पर आधारित है। वे चाहते हैं कि उनके बच्चे शिक्षित हों, अच्छी नौकरी प्राप्त करें और सुखी जीवन बिताएँ। लेकिन जैसे-जैसे बच्चे अपने जीवन में आगे बढ़ते हैं, रघुनाथ और उनके बीच दूरी बढ़ती जाती है।इस विडंबना को समझना उपन्यास की वृद्धावस्था संबंधी दृष्टि को समझने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

रघुनाथ: वृद्धावस्था के केंद्रीय पात्र:

रघुनाथ का चरित्र उपन्यास की पूरी सामाजिक संरचना को समझने की कुंजी है। वे एक ऐसे पिता हैं जिन्होंने अपने बच्चों के भविष्य के लिए अपनी आर्थिक और भावनात्मक ऊर्जा खर्च की है। लेकिन वृद्धावस्था में वही पिता परिवार के केंद्र से हटकर परिधि पर पहुँच जाता है।

रघुनाथ की वृद्धावस्था में तीन स्तर स्पष्ट हैं—1. शारीरिक वृद्धावस्था-उनकी शारीरिक शक्ति कम होती जाती है। 2.सामाजिक वृद्धावस्था-सेवानिवृत्ति के बाद समाज में उनकी सक्रिय भूमिका सीमित होती जाती है। 3. भावनात्मक वृद्धावस्था-संतानों से दूरी के कारण वे अपने ही परिवार में भावनात्मक रूप से अकेले पड़ जाते हैं। इन तीनों स्तरों का सम्मिलित प्रभाव उनके व्यक्तित्व पर पड़ता है।

शारीरिक क्षीणता और वृद्धावस्था का बोध:

रघुनाथ की वृद्धावस्था का अत्यंत मार्मिक चित्रण उनके शरीर की बदलती क्षमता के माध्यम से किया गया है। उपन्यास में उनके जीवन की लंबाई को चलने की क्षमता से जोड़कर देखा गया है। एक समय वे पंद्रह-सोलह मील तक पैदल चले जाते थे; बाद में यह दूरी घटती गई और अंततः उनकी गतिशीलता बहुत सीमित रह गई। उपलब्ध पाठ में यह परिवर्तन स्पष्ट रूप से दर्ज है। यह प्रसंग केवल शारीरिक कमजोरी का विवरण नहीं है। यह वास्तव में जीवन की घटती हुई परिधि का प्रतीक है। युवावस्था में रघुनाथ का संसार विस्तृत था। वे गाँव, खेत, परिवार और सामाजिक जीवन के बीच सक्रिय थे। वृद्धावस्था में उनका भौतिक संसार छोटा होता जाता है। शरीर की घटती गति के साथ जीवन का सामाजिक विस्तार भी घटता जाता है। इस प्रकार लेखक ने वृद्धावस्था को शरीर और समाज—दोनों के स्तर पर अभिव्यक्त किया है।

पारिवारिक उपेक्षा और वृद्धावस्था:

रघुनाथ की सबसे बड़ी पीड़ा आर्थिक नहीं, बल्कि पारिवारिक है। उन्होंने अपने बच्चों के भविष्य को अपनी प्राथमिकता बनाया था। उनकी आकांक्षा थी कि बच्चे पढ़ें, आगे बढ़ें और परिवार को गौरवान्वित करें। लेकिन बच्चों की सफलता के साथ उनकी स्वतंत्रता और अपने-अपने जीवन की प्राथमिकता बढ़ती जाती है। संजय का अमेरिका जाना इस दूरी का पहला बड़ा संकेत है। वह विदेश जाता है, अपना जीवन बनाता है और विवाह के निर्णय में माता-पिता की अपेक्षाओं को महत्व नहीं देता। रघुनाथ के लिए पुत्र का विदेश जाना केवल भौगोलिक दूरी नहीं है; यह भावनात्मक दूरी की शुरुआत है। यहाँ लेखक आधुनिक शिक्षा और आर्थिक विकास का विरोध नहीं करता। बल्कि वह यह प्रश्न उठाता है कि क्या आर्थिक सफलता के साथ पारिवारिक उत्तरदायित्व भी समाप्त हो जाना चाहिए? रघुनाथ की त्रासदी इसी प्रश्न में निहित है।

'निःसंतान पिता' की विडंबना:

उपन्यास का अत्यंत मार्मिक पक्ष रघुनाथ की वह अनुभूति है जिसमें वे पत्नी शीला के सामने अपनी अंतर्वेदना व्यक्त करते हैं— "शीला हमारे तीन बच्चे हैं लेकिन पता नहीं क्यों, कभी-कभी मेरे भीतर ऐसी हूक उठती है जैसे लगता है मेरी औरत बाँझ है और मैं निःसन्तान पिता हूँ!" यह कथन वृद्धावस्था के मनोविज्ञान को समझने की दृष्टि से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रघुनाथ के तीन बच्चे हैं, फिर भी वे स्वयं को निःसंतान अनुभव करते हैं। इसका अर्थ स्पष्ट है— संतान होना और संतान का भावनात्मक रूप से साथ होना दो अलग-अलग स्थितियाँ हैं। वृद्धावस्था में व्यक्ति को केवल संतान की उपस्थिति नहीं चाहिए; उसे अपनापन, संवाद और सम्मान चाहिए। रघुनाथ की 'निःसंतानता' जैविक नहीं, बल्कि भावनात्मक है।

संजय: वैश्वीकरण और पारिवारिक दूरी:

संजय का चरित्र वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने के लिए महत्त्वपूर्ण है। वह तकनीकी शिक्षा प्राप्त करता है और अमेरिका चला जाता है। उसका जीवन वैश्विक अर्थव्यवस्था से जुड़ जाता है। दूसरी ओर रघुनाथ का जीवन गाँव, परिवार और स्थानीय सामाजिक संरचना से जुड़ा हुआ है। इस प्रकार पिता और पुत्र केवल दो पीढ़ियों का प्रतिनिधित्व नहीं करते; वे दो अलग-अलग सामाजिक संसारों का प्रतिनिधित्व करते हैं। एक ओर— रघुनाथ **:** गाँव, परिवार, जमीन, स्मृति और संबंध। दूसरी ओर— संजय **:** शिक्षा, तकनीक, वैश्विक रोजगार, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और आर्थिक उन्नति। इन दोनों के बीच दूरी उपन्यास की केंद्रीय त्रासदी को जन्म देती है। एक आलोचनात्मक अध्ययन भी उपन्यास में रघुनाथ की संतानों की आर्थिक आकांक्षाओं तथा संवेदनशीलता में कमी को उनके अकेलेपन से जोड़ता है।

धनंजय और आर्थिक असुरक्षा:

धनंजय के माध्यम से वृद्धावस्था और आर्थिक संसाधनों के बीच संबंध सामने आता है।धनंजय अपने पिता से आर्थिक सहायता की अपेक्षा करता है। रघुनाथ की सेवानिवृत्ति के बाद

उपलब्ध संसाधन भी परिवार की अपेक्षाओं का हिस्सा बन जाते हैं। यह स्थिति अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वृद्ध व्यक्ति ने अपने जीवनभर जो बचत की, वह वृद्धावस्था में उसके लिए सुरक्षा का आधार होनी चाहिए। लेकिन यदि वही धन संतान की आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए इस्तेमाल होने लगे, तो वृद्ध व्यक्ति की आर्थिक स्वतंत्रता कमजोर हो सकती है। इस प्रकार 'रेहन पर रग्घू' में वृद्धावस्था की आर्थिक समस्या केवल गरीबी की समस्या नहीं है। यह आर्थिक निर्भरता और पारिवारिक अधिकार-बोध की समस्या भी है।

सरला और पीढ़ीगत संघर्ष:

सरला का प्रसंग वृद्धावस्था के अध्ययन को एक नया आयाम देता है। सरला अपनी पसंद से विवाह करना चाहती है। उसका प्रेम एक ऐसे युवक से है जो रघुनाथ की जातीय मानसिकता के अनुरूप नहीं है। रघुनाथ उसके विवाह का विरोध करते हैं। यहाँ रघुनाथ स्वयं भी परिवर्तन के विरोध में खड़े दिखाई देते हैं। इससे रघुनाथ का चरित्र एकांगी नहीं रहता। वे केवल पीड़ित वृद्ध नहीं हैं; वे स्वयं भी अपने समय के कुछ रूढ़ मूल्यों के प्रतिनिधि हैं। यही काशीनाथ सिंह की रचनात्मक शक्ति है। वे वृद्ध व्यक्ति को पूर्णतः निर्दोष बनाकर प्रस्तुत नहीं करते। रघुनाथ आधुनिक सामाजिक परिवर्तन के शिकार भी हैं और कुछ मामलों में पारंपरिक व्यवस्था के प्रतिनिधि भी। इसलिए उनका चरित्र अधिक वास्तविक और जटिल बन जाता है।

वृद्धावस्था और जातीय मानसिकता:

सरला के विवाह का प्रसंग यह स्पष्ट करता है कि रघुनाथ की पीड़ा केवल नई पीढ़ी की संवेदनहीनता से उत्पन्न नहीं होती।उनके भीतर जाति और सामाजिक प्रतिष्ठा से जुड़ी पारंपरिक धारणाएँ भी हैं। इस संदर्भ में एक आलोचनात्मक अध्ययन ने विशेष रूप से उल्लेख किया है कि सरला के अंतर्जातीय विवाह को लेकर रघुनाथ का विरोध केवल पारिवारिक नहीं, बल्कि जातिगत सामाजिक संरचना से भी जुड़ा है। इससे उपन्यास का वृद्धावस्था-विमर्श और अधिक जटिल हो जाता है। लेखक यह नहीं कहता कि वृद्ध हमेशा सही होते हैं और युवा गलत। इसके बजाय वह दोनों पीढ़ियों की सीमाएँ दिखाता है।

गाँव में सामाजिक अकेलापन:

रघुनाथ की वृद्धावस्था का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उनका सामाजिक अकेलापन है। वे अपने गाँव के लोगों के बीच रहते हुए भी अकेले होते जाते हैं। जिन लोगों से कभी आत्मीय संबंध था, उनके व्यवहार में परिवर्तन आता है। सामाजिक संबंधों में आर्थिक हित और राजनीतिक-सामाजिक शक्ति का प्रभाव बढ़ता है। यहाँ लेखक एक बड़े परिवर्तन की ओर संकेत करता है— सामुदायिक समाज से हित-आधारित समाज की ओर संक्रमण। वृद्ध व्यक्ति ऐसे परिवर्तन में असुरक्षित महसूस करता है क्योंकि उसका सामाजिक जीवन लंबे समय तक संबंधों और पारस्परिकता पर आधारित रहा है।

भूमंडलीकरण और वृद्धावस्था:

'रेहन पर रग्घू' की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक है कि वृद्धावस्था को भूमंडलीकरण के साथ जोड़ा गया है। भूमंडलीकरण से नए रोजगार और अवसर उत्पन्न होते हैं। लेकिन उसी के साथ जीवन की प्राथमिकताएँ बदलती हैं। आर्थिक सफलता व्यक्तिगत उपलब्धि का प्रमुख पैमाना बन जाती है। रघुनाथ की संतान इसी बदलती व्यवस्था में आगे बढ़ती है। लेकिन रघुनाथ जिस मूल्य-व्यवस्था से आते हैं, उसमें परिवार और सामूहिकता का महत्व अधिक है। इसलिए उनके लिए संतान की सफलता तभी सार्थक है जब उसमें परिवार के प्रति संवेदना भी हो। यहीं उपन्यास का मूल प्रश्न सामने आता है—

यदि विकास मनुष्य को अपने ही संबंधों से दूर कर दे, तो उस विकास की मानवीय कीमत क्या है?

बाजारवाद और पारिवारिक संबंध:

बाजारवादी व्यवस्था व्यक्ति की इच्छाओं को निरंतर विस्तार देती है। नई वस्तुएँ, नई सुविधाएँ और नई जीवनशैली व्यक्ति की आवश्यकताओं को बदलती हैं। इसका प्रभाव परिवार पर भी पड़ता है।

संतान अपने भविष्य के लिए अधिक संसाधन चाहती है। शिक्षा और रोजगार के लिए शहर और विदेश आकर्षण का केंद्र बनते हैं। परिवार का सामूहिक जीवन धीरे-धीरे व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं में विभाजित होने लगता है। रघुनाथ इस परिवर्तन के बीच फँसे हुए पात्र हैं। इसलिए उनकी वृद्धावस्था को बाजारवाद की मानवीय कीमत के रूप में भी देखा जा सकता है।

वृद्धावस्था और आत्मसम्मान:

रघुनाथ की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषताओं में से एक उनका आत्मसम्मान है। वे पूरी तरह टूटते नहीं हैं। परिस्थितियाँ उन्हें कमजोर करती हैं, लेकिन उनके भीतर अपने अस्तित्व की चेतना बनी रहती है। यही कारण है कि उपन्यास में वृद्धावस्था केवल करुणा पैदा नहीं करती; वह पाठक के भीतर प्रतिरोध और आत्मसम्मान का भाव भी उत्पन्न करती है। रघुनाथ की त्रासदी में एक प्रकार की गरिमा बनी रहती है। यही उनकी चरित्रगत शक्ति है।

वृद्धावस्था और अस्मिता-संकट:

वृद्धावस्था में रघुनाथ का सबसे गहरा संकट यह है कि उनकी पहचान के पारंपरिक आधार एक-एक करके कमजोर होते जाते हैं। पहले वे शिक्षक थे,पिता थे,पति थे,किसान-परिवार से जुड़े व्यक्ति थे, गाँव में सम्मानित व्यक्ति थे। लेकिन समय के साथ—नौकरी समाप्त होती है,बच्चे अलग होते हैं,गाँव बदलता है,सामाजिक संबंध कमजोर होते हैं,जमीन विवादों में घिरती है।

इस प्रकार रघुनाथ की सामाजिक पहचान क्रमशः विखंडित होती जाती है।यह वृद्धावस्था का अस्मितामूलक संकट है।

रघुनाथ की मनोवैज्ञानिक स्थिति:

रघुनाथ की मानसिक स्थिति को तीन चरणों में समझा जा सकता है—

अपेक्षा: वे बच्चों से भविष्य की आशा रखते हैं।

निराशा: जब बच्चे अपनी-अपनी दुनिया में चले जाते हैं और उनकी अपेक्षाएँ पूरी नहीं होतीं, तो निराशा बढ़ती है।

आत्मस्वीकृति और प्रतिरोध: अंततः वे यह समझने लगते हैं कि अपने जीवन का अर्थ केवल संतान की उपलब्धियों में खोजने से वे स्वयं को खो देंगे।

यही बिंदु उन्हें एक महत्त्वपूर्ण वृद्ध पात्र बनाता है।

'रेहन पर रग्घू' को केवल 'पुरानी पीढ़ी बनाम नई पीढ़ी' के रूप में पढ़ना उचित नहीं होगा।काशीनाथ सिंह की दृष्टि अधिक जटिल है।रघुनाथ में मानवीय संवेदना है, लेकिन उनके भीतर जातीय रूढ़ियाँ भी हैं।नई पीढ़ी में स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता है, लेकिन संवेदनात्मक दूरी भी है।पुरानी पीढ़ी के पास संबंधों की गहराई है, लेकिन कुछ सामाजिक रूढ़ियाँ हैं।नई पीढ़ी के पास आधुनिक अवसर हैं, लेकिन संबंधों की स्थिरता कम है।लेखक इन दोनों के बीच आलोचनात्मक संतुलन स्थापित करते हैं।

वृद्धावस्था: निजी त्रासदी से सामाजिक विमर्श तक:

'रेहन पर रग्घू' का सबसे बड़ा योगदान यह है कि रघुनाथ की व्यक्तिगत त्रासदी सामाजिक विमर्श में बदल जाती है।रघुनाथ अकेले हैं—लेकिन वे अकेले वृद्ध नहीं हैं।उनके माध्यम से लेखक उन हजारों वृद्ध माता-पिताओं की स्थिति को सामने लाते हैं जिनकी संतान रोजगार, शिक्षा और आर्थिक अवसरों के कारण दूर चली गई है।इसलिए रघुनाथ एक व्यक्ति से आगे बढ़कर समकालीन वृद्ध भारतीय का प्रतिनिधि चरित्र बन जाते हैं।

निष्कर्ष:

काशीनाथ सिंह का 'रेहन पर रग्घू' वृद्धावस्था की समस्या को अत्यंत व्यापक सामाजिक संदर्भ में प्रस्तुत करने वाला महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। रघुनाथ का चरित्र इस उपन्यास की केंद्रीय संवेदना को अपने भीतर समेटे हुए है। रघुनाथ ने अपने जीवन का बड़ा हिस्सा परिवार और संतान के भविष्य के लिए समर्पित किया है। लेकिन वृद्धावस्था में वही व्यक्ति परिवार के केंद्र से हाशिये पर पहुँच जाता है। संतान की आर्थिक सफलता, विदेश-प्रवास, व्यक्तिगत स्वतंत्रता और बदलते जीवन-मूल्य उसके लिए भावनात्मक दूरी का कारण बनते हैं। उनकी स्थिति यह सिद्ध करती है कि वृद्धावस्था की सबसे बड़ी समस्या केवल आर्थिक निर्भरता या शारीरिक कमजोरी नहीं है। उससे अधिक गंभीर समस्या है- भावनात्मक उपेक्षा। रघुनाथ के 'निःसंतान पिता' होने की अनुभूति इस बात को स्पष्ट करती है कि संतान की संख्या नहीं, बल्कि संबंधों की आत्मीयता वृद्ध व्यक्ति के जीवन को अर्थ देती है। उपन्यास में गाँव और जमीन भी वृद्धावस्था के विमर्श से गहराई से जुड़े हैं। रघुनाथ के लिए जमीन उनके जीवन की स्मृति और अस्मिता का हिस्सा है। गाँव का बदलता स्वरूप उन्हें अपने ही परिवेश में अजनबी बनाता है। इस प्रकार ग्रामीण जीवन का विघटन और वृद्ध व्यक्ति का अकेलापन एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं। भूमंडलीकरण और

बाजारवाद के संदर्भ में उपन्यास का महत्त्व और बढ़ जाता है। राजकमल प्रकाशन स्वयं उपन्यास को संवेदना, संबंध और सामूहिकता के विघटन के आख्यान के रूप में रेखांकित करता है।

इस उपन्यास की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि काशीनाथ सिंह रघुनाथ को केवल 'बेचारा बूढ़ा' नहीं बनाते। वे उसे एक जटिल मनुष्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं—जिसमें प्रेम है, त्याग है, आत्मसम्मान है, स्मृति है, लेकिन अपनी पीढ़ी की सामाजिक रूढ़ियाँ भी हैं। इसलिए 'रेहन पर रग्घू' वृद्धावस्था का एकतरफा महिमामंडन नहीं करता, बल्कि वृद्ध और युवा दोनों पीढ़ियों की सीमाओं को सामने लाता है।

अंततः कहा जा सकता है कि 'रेहन पर रग्घू' में वृद्धावस्था आधुनिक भारतीय समाज के मानवीय संकट का दर्पण बन जाती है। रघुनाथ का अकेलापन केवल एक वृद्ध पिता का अकेलापन नहीं, बल्कि उस सामाजिक व्यवस्था का अकेलापन है जिसमें आर्थिक विकास के साथ संबंधों की आत्मीयता कमजोर होती जा रही है। इस दृष्टि से 'रेहन पर रग्घू' को केवल भूमंडलीकरण अथवा ग्राम्य जीवन के विघटन का उपन्यास मानना पर्याप्त नहीं होगा। यह वृद्ध व्यक्ति की गरिमा, पारिवारिक उत्तरदायित्व, पीढ़ी-अंतराल, स्मृति और मानवीय संबंधों के पुनर्मूल्यांकन का महत्त्वपूर्ण उपन्यास भी है।

संदर्भ-सूची:

1. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, प्रथम संस्करण, 2008
2. काशीनाथ सिंह, रेहन पर रग्घू, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2008
3. पूजा पाठक, "भूमंडलीकरण के प्रभाव में 'रेहन पर रग्घू'." संवेद, 7 जुलाई 2021